शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवारी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कमलेश्वर के उपन्यास में सत्याग्रह विचार

(सुबह, दोपहर, शाम के सन्दर्भ में)
श्रीमती अर्चना त्रिवेदी (शोधार्थी)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
डॉ पुष्पेंद्र दुबे (निर्देशक)
महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल साईंसेस
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत ने दुनिया को अनेक नवीन विचार दिए हैं। जिससे मनुष्यता ने नई ऊंचायियों को हासिल किया है। आधुनिक युग में मनुष्य की समस्यायों को हल करने के परंपरागत साधनों को त्याग कर नए साधन के रूप में सत्याग्रह की खोज हुई। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में इस शब्द को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया और मनुष्य के गुणों को बढाने में इसका महत्व सिद्ध किया। सत्यग्रह विचार दुनिया को भारत की अनुपम देन है। महात्मा गांधी के विचारों के प्रभाव से साहित्य अछूता न रह सका। अनके साहित्यकारों ने अपनी कविता.काहानी का ताना.बाना गांधी विचारों के इर्द.गिर्द बुना। इन कथाओं में वैचारिक द्वंद्व भी उभरकर सामने आता है। कमलेश्वर ने अपने उपन्यास'सुबह, दोपहर, शाम' में इस हिंसाअहिंसा के वैचारिक द्वंद्व को सहज रूप से अभिव्यक्त किया है। इसमें से स्त्री पात्र का चरित्र उभरकर सामने आता है। प्रस्तुत शोध पत्र में आलोच्य उपन्यास में वर्णित सत्याग्रह विचार का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन काल से वैचारिक और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का महत्व रहा है। सत्य की रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों ने अनेक कष्ट सहन किये। अत्याचार की समाप्ति के लिए हिंसक साधनों के उपयोग की स्वीकृति देवताओं को दी गयीए परन्तु मनुष्य समाज में कष्ट सहन करते हुए हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया को मान्य किया गया। महर्षि दधिची, बालक ध्रुव, भक्त प्रहलाद, भक्त मीरा आदि ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जिन्होंने स्वयं कष्ट सहन कर मनुष्यता को नयी राह दिखाई। आधुनिक युग में उपनिवेशवाद और गुलामी से मुक्ति के लिए महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा में नए अर्थ भरे। सत्य और आग्रह दोनों शब्द पहले से मौजूद थे। इसे मिलाकर एक नया शब्द बनाया 'सत्याग्रह'। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए इसका सफल प्रयोग किया। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वीतीय विश्वयुद्ध के बीच में अहिंसा से आजादी हासिल करने का संकल्प भारत ने किया। आजादी आन्दोलन के साथ सत्याग्रह शास्त्र का विकास हुआ। उन्होंने देश की जनता को सत्य के पालन का शिक्षण दिया। भारत की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कारण जनता ने इस

विचार को स्वीकार किया। इसे स्वीकारोक्ति साहित्यकारों ने अपने साहित्य में विविध पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

कमलेश्वर के उपन्यास में सत्याग्रह विचार

कमलेश्वर ने 'सुबह, दोपहर, शाम' (1982) उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व के भारतीय समाज की स्थिति पर प्रकाश डाला है। इसमें शहरी मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। उपन्यास में एक ही परिवार में सिद्धांतों और आदर्शों के स्तर पर भिन्नता पायी जाती है। उपन्यास की पात्र बड़ी अम्मा अंग्रेजों से नफरत करती है। जसवंत रेलगाड़ी के महकमे में नौकरी करने की इच्छा को बड़ी दादी के सामने व्यक्त करता है। तब बड़ी दादी उससे कहती है, "तुझे रोटी की कमी पड़ती है क्या ?...तो फिर अंग्रेज बहादुर की गुलामी करने काहे जा रहा है - क्या उनकी रोटी में ज्यादा गुड़ लगा है...देख जसवंत! रोटी तो कुत्ता भी खाता है, जो टुकड़ा फेंक दो, उसे ही खा लेता है, पर मनुष्य रोटी-रोटी में भेद करता है...तू रोटी का भेद भूल गया है..जैसे तेरी बुआ भूल गई है। तेरी बुआ इसी पेट से जाई है..पर मेरी कोख उसे जनम देकर चैदह बरस बाद काली पड़ गई। वह अपने आदमी के साथ अंग्रेज बहादुर की रोटी तोड़ने लगी....उसकी तड़क-भड़क, हवेली, पैसा, तलवार - तुझे ज्यादा सुहाने लगी ?"1

बड़ी दादी के उपयुक्त वाक्यांश उनकी अंग्रेजों के प्रति नफरत बताने के लिए पर्याप्त हैं। वास्तव में बड़ी दादी के पति 1857 में अंग्रजों के हाथों मारे गए थे। बड़ी दादी अपने को सधवा ही मानती थीं। उनके मन में यह इच्छा थी कि जसवंत बड़ा होकर अंग्रजों से अपने पिता की मौत का बदला लेगा। लेकिन जसवंत अंग्रेजों की सेवा करने को तैयार होता है। इसी परिवार में नवीन और प्रवीण दो भाई हैं। नवीन क्रांतिकारी है जबकि प्रवीन का विश्वास अहिंसा पर है। दोनों में वैचारिक भिन्नता के चलते घर में ही महाभारत छिड़ जाता है। अंग्रेज घर की इस फूट का लाभ लेना चाहते हैं, परन्तु शान्ति ऐसा नहीं होने देती। प्रवीन और बाबूजी में नवीन को लेकर जोरदार तकरार होती है। प्रवीन कहता है, "बाबूजी - आप खुद ही सोचिए...इस खून खराबे और डाकेजनी से क्या देश आजाद हो जाएगा ?

बाबूजी - तो तुम्हारे चरखा काते से भी देश आजादी नहीं हो पाएगा! बाबूजी ने तैश में कहा - टीपू सुल्तान, नाना फड़नवीस, झांसी की रानी और बहादुरशाह जफर पागल नहीं थे।

प्रवीन बोला - यह हिंसा का रास्ता गलत है....नवीन गलती कर रहा है।

बाबूजी - मैं कहता हूं ....नवीन सही है! आजादी के लिए कोई रास्ता गलत नहीं हेाता। इतनी बड़ी बर्तानिया सरकार से लोहा लेना कोई मामूली काम नहीं है।

तभी तो मैं कहता हूं - नवीन कोई मामूली काम नहीं कर रहा है। वह बहुत बड़ा काम कर रहा है। प्रवीण अपने बाबूजी को समझाते हुए कहता है "हम यह नहीं कहते कि देश के लिए कोई न लड़े - पर लड़ाई के तरीके अलग हो सकते हैं! मैं भी तो लड़ता हूं...अगर इसी रास्ते से चल के नवीन भी लड़े तो दोनों काम हो सकते हैं!"2

प्रवीन अपने बाबूजी को समझाने में असफल हो जाता है। अंत में प्रवीण कह उठता है, "मैं आतंकवादियों से कोई संबंध नहीं रख सकता।...बाबूजी कहते हैं - यही तुम्हारा अहिंसावाद है! यही तुम्हारा गांधीवाद है! प्रवीण ने कहा - हां है! आतंकवाद से देश का भला नहीं होगा।"3 प्रवीण की नजर में हिंसा से आजादी हासिल करने वाले आतंकवादी हैं। जबकि बाबूजी की निगाह में वे बलिदानी और शहीद हैं।

उपन्यास के प्रारम्भ में प्रवीन भी हिंसा से ही देश को आजाद करने के पक्ष में था, परन्तु आगे जाकर वह अपना रास्ता बदल देता है। इस तथ्य की जानकारी इस संवाद से होती है, "नवीन कहता है, "प्रवीन भइया तो मुझसे पहले हमारी इसी पार्टी में रहे हैं, अब वह अहिंसावादी हो गए हैं, हमारे पुराने साथी तो अब भी उन्हें याद करते हैं, लेकिन यह समझ में नहीं आता कि यह अहिंसावादी बार-बार साम्राज्यवादियों से बातें करने क्यों पहुंच जाते हैं। बस यही हमें खलता है....हम अपने खून से जिस दीवार को लाल करते हैं, उसे ये लोग चूना-मिट्टी से पोतकर फिर सफेद कर जाते हैं।"4

क्रान्तिकारी दल रेलगाड़ी से जानेवाले अंग्रेजों का खजाना लूट लेते हैं। इस पर अंग्रेज सरकार मोहल्ले वालों पर जुर्माना लगा देती है। अंग्रेजों के इस फर्मान का कांग्रेस अहिंसक तरीके से विरोध करती है। अंतत: अंग्रेज सरकार को अपना फरमान वापस लेना पड़ता है। तब प्रवीण अपने घर पर बताता है, "देखा, अहिंसा के रास्ते पर कैसे मसलों को सुलझाया जा सकता है।...इस धरती को आजाद करने का एक ही रास्ता है अहिंसा का रास्ता! यह देश,...यह धरती...हमारी भारत माता इसी तरह आजाद हो सकती है!"5

उपन्यास में प्रवीन महात्मा गांधी के विचारों का प्रतिनिधि पात्र है। वह असहयोग और सत्याग्रह की व्याख्या भी करता है। प्रवीन से इन्सपेक्टर से अगले दिन थाने आने का कहा। जब अगले दिन प्रवीन थाने जाने लगा, तब उसके साथ बाबूजी भी हो लिए। मिर्जा साहब भी आ गए।

प्रवीन ने मिर्जा साहब से कहा, "हिंसा से तो हिंसा बढ़ेगी और जुल्म भी बढ़ते जाएंगे...हमें शांति और अहसयोग से काम लेना पड़ेगा...

मिर्जा साहब बोले - तो असहयोग शुरू करो! बुलाया है तो जाने से इनकार करो!

नहीं...असहयोग का मतलब इनकार नहीं है..हर बात से इनकार करना असहयोग का मकसद नहीं है। सहयोग करो, पर जहां सत्य न हो, उसे स्वीकार मत करो....यह असहयोग होता है। प्रवीन ने कहा।"6

उपन्यास की महिला पात्र शांता के चरित्र को लेखक ने ऊंचाई प्रदान की है। अनेक अवसरों पर वह अंग्रजों से लोहा लेती है। उसका स्पष्ट मत है कि, "अब इस देश को कोई भी आजाद करे! लेकिन अब यह देश गुलाम नहीं रह सकता!"7 यहाँ कोई भी से आशय है हिंसा से अथवा अहिंसा के मार्ग से, देश को आजाद तो होना ही है। जब एक अंग्रेज प्रवीन की मूंछों को हाथ लगाता है, तब शांता शेरनी की तरह आगे आकर कहती है, "ऐई फिरंगी बाबू! मूंछों को हाथ मत लगाना...मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगी...ये मेरे मरद की मूछें हैं। कहते हुए उसने अंग्रेज इन्स्पेक्टर का हाथ झटक दिया।"8

महात्मा गांधी के सत्याग्रह ने महिलाओं में आत्मबल का संचार किया। भारतीय समाज में महिलाओं को घर की चहारदीवारी के भीतर रखा जाता था। महात्मा गांधी ने उन्हें आजादी आन्दोलन में बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया। महिलाओं ने भी सत्याग्रह में बढ़चढ़ कर भाग लिया। उपन्यास में जब अंग्रेज प्रवीन को अपने साथ आने के लिए कहता है, तब शांता बीच में आ जाती है और कहती है, "ये कहीं नहीं जाएंगे। यह हमारा त्योहार का दिन है। हम अपना त्योहार मनाएंगे...। शांता का यह रूप देखकर पड़ोसियों में चर्चा होने लगती है, "शेरनी है शेरनी! दस हाथ का कलेजा है इस बहू का। कैसा मुकाबला किया फिरंगी का! निडर औरत

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवारी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

है...हम लोगों को भी इतना डरना नहीं चाहिए..गोरी चमड़ी से।''9

उपन्यास के अंत में शांता का सत्याग्रही रूप निखर आता है। अंग्रेज क्रांतिकारी नवीन को पकड़ने के लिए घर पर आते हैं। नवीन भी हथियार डालने को तैयार है, परंतु शांता को यह मंजूर नहीं। अंग्रेज इन्सपेक्टर अपने सिपाहियों को दरवाजा तोड़ने का हुक्म देता है। तब शांता हड़बड़ी में अपनी धोती खोलकर खिड़की से बाहर फेंकती हुई सिपाहियों से कहती है ''शरम करो...तुम तो हिंदुस्तानी हो तुम्हारी आंखों में तो अपनी बहनों-मांओं के लिए कुछ इज्जत होगी...। ठीक है! तोड़ दो दरवाजा...पर सोच लो...मेरे तन पर एक भी कपड़ा नहीं होगा....देख पाओगे अपनी बहन को नंगा!...शांता दुर्गा बनी हुई थी वह नवीन पर चीखी थी - चुप रहो! मैं औरत नहीं....तुम्हारी भाभी, मां हूं लालाजी! मां..अपने बेटे को इस तरह नहीं दे देगी। फिर सिपाहियों पर बिगड़ी थी - लो आओ...तोड़ो दरवाजा! कहते हुए उसने अपनी फतोई उतारनी शुरू की थी...हिंदुस्तानी सिपाहियों की आंखें एक-दूसरे से मिली थीं - उनके जन्मों के संस्कार जागे थे और वे बंदूकें फेंककर खड़े हो गए थे सिर झुकाए।''10

निष्कर्ष

देश की आजादी में हजारों नौजवानों ने अपना सर्वस्व न्योछावर किया। परिवारों के सामने आने वाले संकटों का सामना किया। कमलेश्वर ने अपने उपन्यास 'सुबह, दोपहर, शाम' में जिस वैचारिक द्वंद्व को उभारा है, वह वास्तविकता के अत्यंत निकट है। सत्य और अहिंसा के आधार से मनुष्य की सद्वृत्तियों को जाग्रत किया जा सकता है। कष्ट सहन करते हुए सामने वाले के मन में स्वार्थवश दबी हुई करुणा दया, ममता को उजागर करना सत्याग्रही का उद्देश्य होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 7
2 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 94
3 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 97
4 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 102
5 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 104
6 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 127
7 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 98
8 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 124
9 सुबह दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 125
10 सुबह, दोपहर, शाम, कमलेश्वर, पृष्ठ 135-136